इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः ।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः ॥१२॥

इष्टान् – वांछित; भोगान् – जीवन की आवश्यकताएँ; हि – निश्चय; वः – तुम्हें; देवाः – देवतागण; दास्यन्ते – प्रदान करेंगे; यज्ञ-भाविताः – यज्ञ सम्पन्न करने से प्रसन्न होकर; तैः – उनके द्वारा; दत्तान् – प्रदत्त

वस्तुएँ; अप्रदाय – बिना भेंट किये; एभ्यः – इन देवताओं को; यः – जो; भुङ्क्ते - भोग करता है; स्तेनः – चोर; एव – निश्चय ही; सः – वह |

Text

जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले विभिन्न देवता यज्ञ सम्पन्न होने पर प्रसन्न होकर तुम्हारी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे | किन्तु जो इन उपहारों को

देवताओं को अर्पित किये बिना भोगता है, वह निश्चित रूप से चोर है |

गीता भूषण टीका

इसी विषय को स्पष्ट करते हुए, भगवान् अब कर्मों के अनुष्ठान के दोष को दिखा रहे हैं।

“पूर्व सृष्ट देवता जो मेरे अंग हैं , वे तुमको अधिकाधिक इच्छित वस्तुएं देंगे जो यज्ञ के सम्पादन के ऊपर निर्भर करेगी और जो मुक्ति प्राप्त करने

के लिए उपयोगी होंगी (इष्टान् भोगान्)| वे वर्षा देंगे जो अन्न इत्यादि उत्पन्न करेगी | मूलत: देवताओं के द्वारा प्रदत्त इस अन्न को ,जो व्यक्ति स्वयं भोगता है और पञ्च महा यज्ञों के द्वारा इसका भाग देवताओं को अर्पित नहीं करता है वह चोर है | देवताओं की संपत्ति को चुरा कर वह स्वयं को पुष्ट करता है |

जैसे एक चोर को राजा द्वारा दंडित किया जाता है उसी प्रकार वह

यमराज द्वारा दंडित होने का अधिकारी होता है। वह मानव जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनुपयुक्त है। ”

Purport

देवतागण भगवान् विष्णु द्वारा भोग-सामग्री प्रदान करने के लिए अधिकृत किये गये हैं | अतः नियत यज्ञों द्वारा उन्हें अवश्य संतुष्ट करना चाहिए | वेदों में विभिन्न देवताओं के लिए

भिन्न-भिन्न प्रकार के यज्ञों की संस्तुति है, किन्तु वे सब अन्ततः भगवान् को ही अर्पित किये जाते हैं | किन्तु जो यः नहीं समझ सकता है कि भगवान् क्या हैं, उसके लिए देवयज्ञ का विधान है | अनुष्ठानकर्ता के भौतिक गुणों के अनुसार वेदों में विभिन्न प्रकार के यज्ञों का विधान है | विभिन्न देवताओं की पूजा भी उसी आधार पर अर्थात् गुणों के अनुसार की जताई है | उदाहरणार्थ,

मांसाहारियों को देवी काली की पूजा करने के लिए कहा जाता है, जो भौतिक प्रकृति की घोर रूपा हैं और देवी के समक्ष पशुबलि का आदेश है | किन्तु जो सतोगुणी हैं उनके लिए विष्णु की दिव्य पूजा बताई जताई है | अन्ततः समस्त यज्ञों का ध्येय उत्तरोत्तर दिव्य-पद प्राप्त करना है | सामान्य व्यक्तियों के लिए कम से कम पाँच यज्ञ आवश्यक हैं, जिन्हें पञ्चमहायज्ञ कहते हैं |

किन्तु मनुष्य को यह जानना चाहिए कि जीवन की सारी आवश्यकताएँ भगवान् के देवता प्रतिनिधियों द्वारा ही पूरी की जाती हैं | कोई कुछ बना नहीं सकता | उदाहरणार्थ मानव समाज के भोज्य पदार्थों को लें | इन भोज्य पदार्थों में शाकाहारियों के लिए अन्न, फल, शाक, दूध, चीनी आदि हैं और मांसाहारियों के मांसादि जिनमें से कोई भी पदार्थ मनुष्य नहीं बना सकता | एक और उदहारण लें –

यथा उष्मा, प्रकाश, जल, वायु आदि जो जीवन के लिए आवश्यक हैं, इनमें से किसी को बनाया नहीं जा सकता | परमेश्वर के बिना न तो प्रचुर प्रकाश मिल सकता है, न चाँदनी, वर्षा या प्रातःकालीन समीर ही, जिनके बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता | स्पष्ट है कि हमारा जीवन भगवान् द्वारा प्रदत्त वस्तुओं पर आश्रित है | यहाँ तक कि हमें अपने उत्पादन-उद्यमों के लिए अनेक कच्चे मालों की

आवश्यकता होती है यथा धातु, गंधक, पारद, मैंगनीज तथा अन्य अनेक आवश्यक वस्तुएँ जिनकी पूर्ति भगवान् के प्रतिनिधि इस उद्देश्य से करते हैं कि हम इनका समुचित उपयोग करके आत्म-साक्षात्कार के लिए अपने आपको स्वस्थ एवं पुष्ट बनायें जिससे जीवन का चरम लक्ष्य अर्थात् भौतिक जीवन-संघर्ष से मुक्ति प्राप्त हो सके | यज्ञ सम्पन्न करने से मानव जीवन का चरम लक्ष्य प्राप्त हो

जाता है | यदि हम जीवन-उद्देश्य को भूल कर भगवान् के प्रतिनिधियों से अपनी इन्द्रियतृप्ति के लिए वस्तुएँ लेते रहेंगे और इस संसार में अधिकाधिक फँसते जायेंगे, जो कि सृष्टि का उद्देश्य नहीं है तो निश्चय ही हम चोर हैं और इस तरह हम प्रकृति के नियमों द्वारा दण्डित होंगे | चोरों का समाज कभी सुखी नहीं रह सकता क्योंकि उनका कोई जीवन-लक्ष्य नहीं होता | भौतिकतावादी चोरों का कभी

कोई जीवन-लक्ष्य नहीं होता | उन्हें तो केवल इन्द्रियतृप्ति की चिन्ता रहती है, वे नहीं जानते कि यज्ञ किस तरह किये जाते हैं | किन्तु चैतन्य महाप्रभु ने यह यज्ञ सम्पन्न करने की सरलतम विधि का प्रवर्तन किया | यः है संकीर्तन-यज्ञ जो संसार के किसी भी व्यक्ति द्वारा, जो कृष्णभावनामृत के सिद्धान्तों को अंगीकार करता है, सम्पन्न किया जा सकता है |

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥ १३॥

यज्ञ-शिष्ट – यज्ञ सम्पन्न करने के बाद ग्रहण किये जाने वाले भोजन को; अशिनः – खाने वाले; सन्तः – भक्तगण; मुच्यन्ते – छुटकारा पाते हैं; सर्व – सभी प्रकार के; किल्बिषैः – पापों से; भुञ्जते – भोगते हैं; ते – वे; तु –

लेकिन; अघम् – घोर पाप; पापाः– पापीजन; ये – जो; पचन्ति – भोजन बनाते हैं; आत्म-कारणात् – इन्द्रियसुख के लिए |

Text

भगवान् के भक्त सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाते हैं, क्योंकि वे यज्ञ में अर्पित किये भोजन (प्रसाद) को ही खाते हैं | अन्य लोग, जो अपनी इन्द्रियसुख के लिए भोजन बनाते हैं, वे निश्चित रूप से पाप खाते हैं |

गीता भूषण टीका

भगवान् विष्णु मूर्तिमान यज्ञ हैं और सभी जीवों के ईश्वर हैं जिनके अंग देवता गण हैं | भक्त गण सर्वेश्वर भगवान् विष्णु की अर्चना करके उनके प्रसाद को ग्रहण करके अपने शरीर को धारण करते हैं और इस प्रकार अनादि काल से अर्जित पापों से वे मुक्त हो जाते हैं | यह शुद्धिकरण आवश्यक है क्योंकि पाप आत्म अनुभूति में बाधा बनते हैं परन्तु जो

लोग केवल अपने पोषण के लिए भोजन बनाते हैं (जिस भोजन को भगवान् विष्णु जिनके अंग देवता हैं उनके लिए होना चाहिए था) वे केवल पाप ही खाते हैं | चावल जिसे वे पकाते हैं वह पाप के रूप में परिणित हो जाता है इसलिए कहा जा रहा है की वे पाप ही खाते हैं |

Purport

भगवद्भक्तों या कृष्णभावनाभावित पुरुषों को सन्त कहा जाता है | वे सदैव भगवत्प्रेम में निमग्न रहते हैं, जैसा कि ब्रह्मसंहिता में (५.३८) कहा गया है –

प्रेमाञ्जनच्छुरितभक्तिविलोचनेन
सन्तः सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति |

सन्तगण श्रीभगवान् गोविन्द (समस्त आनन्द के दाता), या मुकुन्द (मुक्ति के दाता), या कृष्ण (सबों को आकृष्ट

करने वाले पुरुष) के प्रगाढ़ प्रेम में मग्न रहने के कारण कोई भी वस्तु परम पुरुष को अर्पित किये बिना ग्रहण नहीं करते | फलतः ऐसे भक्त पृथक्-पृथक् भक्ति-साधनों के द्वारा, यथा श्रवण, कीर्तन, स्मरण, अर्चन आदि के द्वारा यज्ञ करते रहते हैं, जिससे वे संसार की सम्पूर्ण पापमयी संगति के कल्मष से दूर रहते हैं | अन्य लोग, जो अपने लिए या इन्द्रियतृप्ति के लिए भोजन बनाते हैं वे न केवल चोर हैं,

अपितु सभी प्रकार के पापों को खाने वाले हैं | जो व्यक्ति चोर तथा पापी दोनों हो, भला वह किस तरह सुखी रह सकता है? यह संभव नहीं | अतः सभी प्रकार से सुखी रहने के लिए मनुष्यों को पूर्ण कृष्णभावनामृत में संकीर्तन-यज्ञ करने की सरल विधि बताई जानी चाहिए, अन्यथा संसार में शान्ति या सुख नहीं हो सकता |

अन्नाद्भवन्ति भूतानि
पर्जन्यादन्नसम्भवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः
कर्मसमुद्भवः ॥४॥

अन्नात् – अन्न से; भवन्ति – उत्पन्न होते हैं; भूतानि – भौतिक शरीर; पर्जन्यात् – वर्षा से; अन्न – अन्न का; सम्भवः – उत्पादन; यज्ञात् – यज्ञ सम्पन्न करने से; भवति – सम्भव होती है; पर्जन्यः – वर्षा; यज्ञः – यज्ञ का

सम्पन्न होबा; कर्म – नियत कर्तव्य से; समुद्भवः – उत्पन्न होता है |

Text

सारे प्राणी अन्न पर आश्रित हैं, जो वर्षा से उत्पन्न होता है | वर्षा यज्ञ सम्पन्न करने से होती है और यज्ञ नियत कर्मों से उत्पन्न होता है |

गीता भूषण टीका

प्रजापति परम ईश्वर भगवान् विष्णु ने प्रजा को उत्पन्न किया और उनके उपजीवन के लिए यज्ञ की प्रक्रिया की सृष्टी करी | जो भगवान् का आज्ञाकारी है उसको यग्य करना ही चाहिए इस मंशा से भगवान् इन दो श्लोकों को बोल रहे हैं |

जीव भोजन से उत्पन्न होते हैं जैसे चावल क्योंकि अन्न वीर्य और रक्त में परिवर्तित होता है जो शरीर का पोषण

करता है | अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है | ऐसा कहा गया है की :

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यग् आदित्यम् उपतिष्ठते
आदित्याज् जायते वृष्टिर् वृष्टेर् अन्नं ततः प्रजाः
अग्नि में दी गयी आहुति सूर्य को प्राप्त होती है . वर्षा सूर्य से उत्पन्न होती है . वर्षा से अन्न उत्पन्न होता है और अन्न से प्रजा की उत्पत्ति होती है .

मनु स्मृति ३.७६

Purport

भगवद्गीता के महान टीकाकार श्रील बलदेव विद्याभूषण इस प्रकार लिखते हैं – ये इन्द्राद्यङ्गतयावस्थितं यज्ञं सर्वेश्वरं विष्णुमभ्यर्च्य तच्छेषमश्नन्ति तेन तद्देहयात्रां सम्पादयन्ति ते सन्तः सर्वेश्वरस्य यज्ञपुरुषस्य भक्ताः सर्वकिल्बिषैर् अनादिकालविवृध्दैर्

आत्मानुभवप्रतिबन्धकैर्निखिलैः पापैर्विमुच्यन्ते | परमेश्वर, जो यज्ञपुरुष अथवा समस्त यज्ञों के भोक्ता कहलाते हैं, सभी देवताओं के स्वामी हैं और जिस प्रकार शरीर के अंग पुरे शरीर की सेवा करते हैं, उसी तरह सारे देवता उनकी सेवा करते हैं | इन्द्र, चन्द्र तथा वरुण जैसे देवता भगवान् द्वारा नियुक्त अधिकारी हैं, जो सांसारिक कार्यों की देखरेख करते हैं | सारे वेद इन देवताओं को प्रसन्न

करने के लिए यज्ञों का निर्देश करते हैं, जिससे वे अन्न उत्पादन के लिए प्रचुर वायु, प्रकाश तथा जल प्रदान करें | जब कृष्ण की पूजा की जाती है तो उनके अंगस्वरूप देवताओं की भी स्वतः पूजा हो जाती है, अतः देवताओं की अलग से पूजा करने की आवश्यकता नहीं होती | इसी हेतु कृष्णभावनाभावित भगवद्भक्त सर्वप्रथम कृष्ण को भोजन अर्पित करते हैं और तब खाते हैं – यह ऐसी

विधि है जिससे शरीर का आध्यात्मिक पोषण होता है | ऐसा करने से न केवल शरीर के विगत पापमय कर्मफल नष्ट होते हैं, अपितु शरीर प्रकृति के समस्त कल्मषों से निरापद हो जाता है | जब कोई छूत का रोग फैलता है तो इसके आक्रमण से बचने के लिए रोगाणुरोधी टीका लगाया जाता है | इसी प्रकार भगवान् विष्णु को अर्पित करके ग्रहण किया जाने वाला भोजन हमें भौतिक

संदूषण से निरापद बनाता है और जो इस विधि का अभ्यस्त है वह भगवद्भक्त कहलाता है | अतः कृष्णभावनाभावित व्यक्ति, जो केवल कृष्ण को अर्पित किया भोजन करता है, जो आत्म-साक्षात्कार के मार्ग में बाधक बनते हैं | इसके विपरीत जो ऐसा नहीं करता वह अपने पापपूर्ण कर्म को बढाता रहता है जिससे उसे सारे पापफलों को भोगने के लिए अगला शरीर कुकरों-

सुकरों के समान मिलता है | यह भौतिक जगत् नाना कल्मषों से पूर्ण है और जो भी भगवान् के प्रसाद को ग्रहण करके उनसे निरापद हो लेता है वह उनके आक्रमण से बाख जाता है, किन्तु जो ऐसा नहीं करता वह कल्मष का लक्ष्य बनता है |

अन्न अथवा शाक वास्तव में खाद्य हैं | मनुष्य विभिन्न प्रकार के अन्न, शाक, फल आदि खाते हैं, जबकि पशु इन पदार्थों के अच्छिष्ट को खाते

हैं | जो मनुष्य मांस खाने के अभ्यस्त हैं उन्हें भी शाक के उत्पादन पर निर्भर रहना पड़ता है, क्योंकि पशु शाक ही खाते हैं | अतएव हमें अन्ततोगत्वा खेतों के उत्पादन पर ही आश्रित रहना है, बड़ी-बड़ी फैक्टरियों के उत्पादन पर नहीं | खेतों का यः उत्पादन आकाश से होने वाली प्रचुर वर्षा पर निर्भर करता है और ऐसी वर्षा इन्द्र, सूर्य, चन्द्र आदि देवताओं के द्वारा नियन्त्रित होती है | ये देवता भगवान्

के दास हैं | भगवान् को यज्ञों के द्वारा सन्तुष्ट रखा जा सकता है, अतः जो इन यज्ञों को सम्पन्न नहीं करता, उसे अभाव का सामना करना होगा – यही प्रकृति का नियम है | अतः भोजन के अभाव से बचने के लिए यज्ञ और विशेष रूप से इस युग के लिए संस्तुत संकीर्तन-यज्ञ, सम्पन्न करना चाहिए |

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि
ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे
प्रतिष्ठितम् ॥५॥

कर्म – कर्म; ब्रह्म – वेदों से; उद्भवम् – उत्पन्न; विद्धि – जानो; ब्रह्म – वेद; अक्षर – परब्रह्म से; समुद्भवम् – साक्षात् प्रकट हुआ; तस्मात् – अतः; सर्व-गतम् – सर्वव्यापी; ब्रह्म – ब्रह्म; नित्यम् –

शाश्वत रूप से; यज्ञे – यज्ञ में; प्रतिष्ठितम् – स्थिर |

Text

वेदों में नियमित कर्मों का विधान है और ये साक्षात् श्रीभगवान् (परब्रह्म) से प्रकट हुए हैं | फलतः सर्वव्यापी ब्रह्म यज्ञकर्मों में सदा स्थित रहता है |

गीता भूषण टीका

यह जानो की ऋत्विज आदि का व्यापार रूपी कर्म ब्रह्म माने वेद से ही प्रकट हुआ है | यह समझो की ब्रह्म अर्थात वेद से ही उनकी प्रवृति उत्पन्न हुई है |

यह जानो की वेद ,अक्षर अर्थात परम भगवान् से ही उत्पन्न होते हैं .

श्रुतियां कहती हैं की :

अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितम् एतद् ऋग्-वेदो यजुर्-वेदः साम-वेदो 'थाङ्गीरसः और अथर्व

ऋग् वेद, यजुर वेद, साम वेद और अथर्व वेद उस महान व्यक्ति के निश्वास हैं |

बृहद अरण्यक उपनिषद् 2.4.10

क्योंकि यज्ञ की इस प्रक्रिया के द्वारा प्रजा का पालन होता है इस कारण से यह यज्ञ की प्रक्रिया भगवान् को बहुत

प्रिय है अतएव (तस्मात्) भगवान् (ब्रह्म) जो सर्व व्यापी है (सर्व गत) वे नित्य ही यग्य में प्रतिष्ठित रहते हैं |इस का अर्थ यह है की यज्ञ के द्वारा उनकी प्राप्ति होती है |

Purport

इस श्लोक में यज्ञार्थ-कर्म अर्थात् कृष्ण को प्रसन्न करने के लिए कर्म की आवश्यकता को भलीभाँति विवेचित किया गया है | यदि हमें

यज्ञ-पुरुष विष्णु के परितोष के लिए कर्म करने है तो हमें ब्रह्म या दिव्य वेदों से कर्म की दिशा प्राप्त करनी होगी | अतः सारे वेद कर्मादेशों की संहिताएँ हैं | वेदों के निर्देश के बिना किया गया कोई भी कर्म विकर्म या अवैध अथवा पापपूर्ण कर्म कहलाता है | अतः कर्मफल से बचने के लिए सदैव वेदों से निर्देश प्राप्त करना चाहिए | जिस प्रकार सामान्य जीवन में राज्य के निर्देश के अन्तर्गत कार्य

करना होता है उसी प्रकार भगवान् के परम राज्य के निर्देशन में कार्य करना चाहिए | वेदों में ऐसे निर्देश भगवान् के श्वास से प्रत्यक्ष प्रकट होते हैं | कहा गया है – अस्य महतो भूतस्य निश्वसितम् एतद् यद्ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः "चारों वेद – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद – भगवान् के श्वास से अद्भुत हैं |" (बृहराण्य क उपनिषद् ४.५.११)

ब्रह्मसंहिता से प्रमाणित होता है कि सर्व शक्तिमान होने के कारण भगवान् अपने श्वास के द्वारा बोल सकते हैं, अपनी प्रत्येक इन्द्रिय के द्वारा अन्य समस्त इन्द्रियों के कार्य सम्पन्न कर सकते हैं, दुसरे शब्दों में, भगवान् अपनी निःश्वास के द्वारा बोल सकते हैं और वे अपने नेत्रों से गर्भधान कर सकते हैं | वस्तुतः यह कहा जा सकता है कि उन्होंने प्रकृति पर दृष्टिपात किया और समस्त जीवों को

गर्भस्थ किया | इस तरह प्रकृति के गर्भ में बद्धजिवों को प्रविष्ट करने के पश्चात् उन्होंने उन्हें वैदिक ज्ञान के रूप में आदेश दिया, जिससे वे भगवद्धाम वापस जा सकें | हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि प्रकृति में सारे बद्धजीव भौतिक भोग के लिए इच्छुक रहते हैं | किन्तु वैदिक आदेश इस प्रकार बानाये गए हैं कि मनुष्य अपनी विकृत इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है और तथाकथित सुखभोग

पूरा करके भगवान् के पास लौट सकता है | बद्धजीवों के लिए मुक्ति प्राप्त करने का सुनहरा अवसर होता है, अतः उन्हें चाहिए कि कृष्णभावनाभावित होकर यज्ञ-विधि का पालन करें | यहाँ तक कि वैदिक आदेशों का पालन नहीं करते वे भी कृष्णभावनामृत के सिद्धान्तों को ग्रहण कर सकते हैं जिससे वैदिक यज्ञों या कर्मों की पूर्ति हो जायेगी |